लेकर पहुंचते हैं और लौ-लपटों में सावधानी से सेकते हैं। कोई बाली गिर न जाए और जल न जाए, इसका ध्यान रखते हैं। यह प्रहलाद की रक्षा जैसे प्रसंगों के विकास का हेतु रहा है।

होली दहन के साथ ही सामूहिक रूप से उसकी परिक्रमा करने की परम्परा है, यह यज्ञ की प्रक्रिया रही है। कहीं-कहीं घरों में गुलरियां बनाई जाती हैं। उनको अपने-अपने घर में होली की आग लाकर जलाया जाता है, यह परम्परा लघु हवनों की रही है। बृहद् और सामूहिक यज्ञ से अग्नि ले जाकर अपने-अपने घरों में हवन होता था।

इस यज्ञ के लिए कभी श्राद्ध की तरह संकल्प किया जाता था और इससे पूर्व मातृपूजादि कर्म होता था- उक्ते मातृपूजादि नवाशन निमित्तकम्। श्राद्धं कृत्वा यमेत्प्राणं तत: संकल्पमुगारेत्। नवप्राशनकर्माहं करिष्येथ विकल्पका:।। कातीय गृहकारिका में इसकी पूरी विधि आई है। इसमें प्रथमत: इन्द्र और फिर सभी देवताओं का स्मरण होता तथा त्रिष्टुप छन्द के प्रयोग के साथ होम के लिए विनियोग होता था। प्रजापति और इष्ट अग्नि देवता का स्मरण भी किया जाता।

दिव्य दिवस और सजीली सांझें

ऋतुसंहार में मौसम के परिवर्तन के एक-एक अनुभव को काव्यबद्ध किया गया है। कवि कालिदास ने इस काल को रसिकों के मन को बेधने वाला कहा है- मनांसि भेत्तुं सुरतप्रसंगिनाम्। पेड़-पौधों पर नव प्रसून को नव संवत्सर की दस्तक मानते हुए यह विचार किया है कि हर ओर परिवर्तन सा हो गया है- सब वृक्ष फूलों से लकदक है, जल में कमल खिल गए हैं, अबलाएं मतवाली हैं, वायु में सुगन्ध का संचार है, सांझे सुहानी हो चली हैं और दिन दिव्य से लगने लगे हैं।

सचमुच यह नया-नया और मनभावन लगने लगा है। घरों की छतों पर ठंडी ओस छाने लगी है, चम्पा के फूलों से जूड़े महकने लगे हैं और वक्षस्थल पर मालाएं पड़ गई हैं। वापिकाओं का जल, मणियों से जड़ी करघनियां, चांदनी, वनिताएं और मंजरियों से लदी आमों की डालियां भी लुभावनी लगने लगी हैं। चुम्बित कनेर के फूल सुचारु लगने लगे हैं, उनकी चंचल, काली, घुंघराली लटों में अशोक के फूल और नव मगिका की खिली हुई कलियां शोभास्पद लगती हैं।

नव संवत्सर की मंगलमयता

नवबहार का यह मौसम सदियों तक भारतीय धरा पर उत्सवों का अवसर बनकर प्रचलित रहा। मुगलकाल में भी इस दौरान अनेक आयोजन होते रहते थे और जिस तरह का वर्णन मुन्तखबत् तवारिख़ आदि में मिलता है, वह ऋतुसंहार का एक रूपक ही प्रतीत होता है हालांकि अनेक नवीन प्रसंग भी जुड़ गए थे। यह प्रियमेलापक अवसर माना गया- समीपवर्तिष्वधुना प्रियेषु समुत्सुका एव भवन्ति नार्य:। गाथा सप्तशती, विष्णुधर्मोत्तर पुराण और अनेक रासो काव्यों में भी इस अवधि को नवीनता के संचार का अवसर कहा है। यह रंग ही नहीं, राग और अनुराग का अवसर स्वीकारा गया है। मद, मादकता और माधुर्य के मास से ही नव संवत्सर का विचार दिखाई देता है। इस दौरान भारी कपड़ों को तिलांजलि देकर शरीरों पर लाह के रंग से हल्के रंगे हुए सुगन्धित काले अगर से सुवासित कपड़ों को धारण करने की परंपरा की ओर कालिदास संकेतित करते हैं- सुगन्धि कालागरुधूपितानि वासांसि धत्ते।

होलिका दहन के अवसर पर भद्रा का नहीं होना और लौ की दिशा के आधार पर वर्ष फल का पूर्वानुमान करना आदि धारणाओं ने इस अवसर को नव संवत्सर की वेला के रूप में भी स्थापित और प्रतिष्ठित किया है, जैसा कि भविष्योत्तर पुराण, वर्षप्रबोध, ज्योतिष रत्नमाला, मुहूर्त चिन्तामणि आदि संकेतित करते हैं। इस तरह होली को नव सस्येष्टि यज्ञ के रूप में स्वीकारा गया है। कतिपय समाज इस दौरान शुभ कामनाओं के परस्पर आदान-प्रदान के लिए यह विचार करते हैं-

होलिका पर्व पर अपने समग्र दोषों का दहन कर हम परस्पर हास-परिहास, राग-रंग, उमंग-तरंग की ताल पर संगीत कला से लयबद्ध होकर इस सौभाग्यकारी जीवन का अपने परिजनों, सगे-सम्बन्धियों और मित्रगणों के साथ आनन्द उठाएं। यह वासन्ती पर्व रंगोत्सव इसी अर्थ में है परस्पर मंगल कामनाओं का आदान-प्रदान हो। रंभा शुक संवाद में जीवन में वसन्त के वैभव और पुरुषत्व की प्रचुरता के लिए कहा है- सुगन्धै: सुपुष्पै: सुशय्या सुकान्ता वसन्त ऋतु: पूर्णिमा पूर्णचन्द्र:। यदा नास्ति पुंस्त्वं नरस्य प्रभूतं तत: किं तत: किं तत किं तत: किम्।।

'स्वर सरिता' आपको नियमित भेजी जाती रही है, अब इसे निरन्तर संचालित करते रहने के लिए कृपया स्वयं प्रेरणा से सदस्यता शुल्क भिजवा कर सहयोग करें।

एक वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹600 छह वर्ष का सदस्यता शुल्क : ₹3000

- चैक/डी.डी. -'वीणा प्रकाशन', जयपुर (VEENA PRAKASHAN, JAIPUR) के नाम निम्न पते पर भेजें या
- बैंक ऑफ बड़ौदा, जौहरी बाजार, जयपुर के अकाउंट नं. 01150200000933 में वीणा प्रकाशन के खाते में जमा करवाएं।
- बैंक की रसीद के साथ अपना पूरा पोस्टल एड्रेस, पिनकोड एवं फोन नम्बर हमें मेल करें।

वीणा प्रकाशन

हल्दिया हाउस, जौहरी बाजार, जयपुर-302003 फोन - 0141-2572666, 4022623

Email-veenaprakashan@gmail.com website: veenaswarsarita.com